विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

रूपम कुमारी, ***वर्ग सप्तम, विषय हिंदी***

दिनांक- 12 सितंबर 2020

Based on NCERT pattern

सुप्रभात बच्चों ,

आज की कक्षा में मैं आपके लिए वृंद के शेष बचे दोहों का भावार्थ लेकर आई हूं ।

।।अध्ययन -सामग्री ।।

दोहा - करत करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान ।

रसरी आवत जात ते सिल पर निशान ।।

भावार्थ - अभ्यास में वह गुण जो जड़मति अर्थात बुद्धिहीन व्यक्ति को भी सुजान यानी बुद्धिमान बना देता है ।

व्याख्या- कवि इन पंक्तियों में कहते हैं कि जिस प्रकार रस्सी के अनेकों बार पत्थर की चबूतरे आने-जाने से चबूतरा घिस जाता है ,ठीक उसी प्रकार, जड़मति यानी बार-बार अभ्यास करने से पंडित या विद्वान हो सकते हैं ।अर्थात उनकी बुद्धि तीव्र और तीक्ष्ण हो जाती है ।

सीख- इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि कुछ सीखने के लिए कुछ पाने के लिए जीवन में अभ्यास की बहुत आवश्यकता होती

है अर्थात अभ्यास बहुत ही महत्वपूर्ण होता है ।

दोहा-

सरस्वती के भंडार की, बड़ी अपूर्व बात ।
ज्यों खर्चे त्यों -त्यों बढ़े, बिना खर्चे घटी जात ।।

भावार्थ- विद्या का भंडार जितना हम खर्च या दान करते हैं उतना ही बढ़ता जाता है । विद्या संचित करने की चीज नहीं है , बांटने की है ।

व्याख्या- कवि इन पंक्तियों में सुरसति अर्थात सरस्वती का भंडार यानी ज्ञान की बात बिल्कुल ही अनोखी है ।यह धन से मेल नहीं खाती ।धन को हम जितना खर्च करती हैं, उतना घटता है ।लेकिन, विद्या या ज्ञान को

जितना बांटते अर्थात दूसरे को देते हैं ,उतना ही बढ़ता जाता है ।

संदेश- इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि विद्या को जितना ही बाटेंगे उतनी और अधिक मात्रा में हमारे पास आएगी । इसलिए कभी भी ज्ञान को छुपा कर नहीं रखना चाहिए ।

दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपनी कॉपी में लिखें ।

धन्यवाद !